शिक्षण का उद्देश्य

हमारा सिखाना या शिक्षा देना हमारे लक्ष्य पर आधारित होना चाहिए।

शिक्षक होने के नाते मेरा लक्ष्य क्या है? जब मैं अपना शिक्षण पूरा कर लूँगा, तब मेरी क्या उपलब्धि होगी?

एक बार जब हम अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं, तब हमको उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमारे तकनीक को विकसित करना चाहिए। हालांकि, लोगों के पास सही लक्ष्य होने के बावजूद भी उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के उनके तरीकों के साथ वह सही ताल–मेल नहीं बिठा पाते।

कभी–कभी ऐसा होता है कि जो हम कर रहे हैं और जो हम पूरा करना चाहते हैं इन दोनों में कोई संबंध ही नहीं होता। हमारे पास एक ऐसा लक्ष्य होता हैं जो या तो हमारी कलीसिया द्वारा दिये जाते हैं या पिछले वर्षों में हमारे शिक्षकों द्वारा सिखाये गये होते हैं।

हमारा लक्ष्य या तो बाइबल, बच्चों को सिखाना होता है या बच्चों को, बाइबल सिखाना होता है।

इनमें क्या अंतर है?

बाइबल, बच्चों को सिखाना

यहाँ बाइबल पहले आता है, बच्चे बाद मे। सामग्री पहले, और श्रोता दूसरा विचार होता है। इसमें कोई रचनात्मकता, कोई अमलीकरण, कोई दृश्य सहायता आदि की उपयोगिता नहीं दिखाई देती। एक अध्यापक के नाते, इसमें हमें बच्चों से ज्यादा बाइबल कर ज्ञान रखना होता है और उन्हें सिखाना पड़ता है। समय बीतने के साथ साथ पढ़ाई रूक जाती है।

बच्चों को, बाइबल सिखाना

यह विधि बच्चों पर केन्द्रित होती है। इसमें बच्चों को बाइबल के बारे में जानना होता है। इसका अर्थ यह है कि हमें अधिक रचनात्मक, अधिक उत्साही और वास्तव में अच्छे शिक्षक होने की आवश्यकता होती है। इस विधि में हम चाहते हैं कि ये सभी बच्चे बाइबल को जान लें। यह एक अच्छा लक्ष्य है। यह एक बुरा लक्ष्य नहीं हैं।

इसके अलावा एक और उत्तम लक्ष्य है।

यदि आप ईमानदार हो तो हम इस बात को जानते हैं कि हमारी कलीसियाओं में समस्यायें हैं। लेकिन आपकी कलीसिया में समस्या विश्वासी और गैर–विश्वासी के बीच नहीं है। नहीं, वास्तविक समस्या विश्वासियों के बीच में हैं। कलीसिया में अधिक समस्या इसलिये नहीं है कि लोग बाइबल ज्यादा नहीं जानते। कलीसिया में समस्या इसलिये हैं कि लोग बाइबल के ज्ञान को जीवन में उपयोग में नहीं लाते!

कलीसिया में समस्या इसलिए नहीं है कि लोगों ने 'क्षमा न करने वाले सेवक' का दृष्टान्त नहीं सुना। कलीसिया में समस्या इसलिए है कि इस दृष्टान्त में जो जीवन के सिद्धांत प्रभु यीशु ने बताया, उसको लोग जीवन में नहीं उतारते।

यदि आत्मिक परिपक्वता, बाइबल ज्ञान का पर्यायवाची होता तो ये दोनों लक्ष्य पूरे हो जाते या ये काफी होते।

यदि इसका प्रमाण चाहते हो, तो फरीसियों को देखोः

मत्ती 23:15–16; 27–28

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।। हे अन्धे अगुवों, तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा।

हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।।

आत्मिक परिपक्वता को उसकी उपयोगिता के आधार पर मापा जाता है। यदि यह ज्ञान के आधार पर मापा जाता तो फरीसियों को प्रभु यीशु से इस प्रकार की डांट नहीं सुननी पड़ती।

सही अर्थों में, सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना आशीष का कारण नहीं बनता। प्रभु यीशु हमारे कार्यों को देखता है। वह सिर्फ चूना फिरी हुई कब्रों को नहीं देखना चाहता।

याकूब 1:22 *''परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते है।''*

याकूब की पत्री से एक उदाहरण देखेंः

याकूब 1:23–24 *''क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो और उसपर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता है और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था।''*

क्षण भर के लिए दर्पण को देखना और आगे बढ़ जाना कोई मदद नहीं करेगा।

सिर्फ जानकारी रखना कोई मायने नहीं रखता। प्रभु यीशु मसीह यह चाहते हैं कि हम बाइबल के सत्य को जियें, सिर्फ उसके वचनों को कंठस्थ करने से कोई मतलब नहीं। सत्य को जानने का लाभ तभी मिलेगा जब हम उसे अपने जीवन में लागू करें।

यह हम दो तरीके से कर सकते हैं:

1. जिन बच्चों को हम पढ़ा रहे हैं:
   बच्चों को केवल बातों को सीखना या याद करना कुछ मायने नहीं रखता। ज्ञान से कुछ अधिक लाभ नही होता। बाइबल को जीना ही मायने रखता है। हमें उन्हें इस तरीके से यह सिखाना होगा कि वे सिर्फ वचनों को याद ही न करें बल्कि उसे अपने जीवन में कार्य के रूप में लागू करें।
2. एक शिक्षक के रूप में हमारा जीवन:
   यह जानना काफी नहीं कि एक अच्छा शिक्षक कैसे बनें और हमें क्या करना आना चाहिए, परन्तु उन सभी बातों को हम को करना पड़ेगा, यही महत्वपूर्ण हैं।

कर्म करना ही आत्मिक परिपक्वता है! अर्थात् ''कार्य करना''। कार्य करने का अर्थ ज्ञान रखने से भिन्न है।

जब हम स्वर्ग जायेंगे वहॉ बाइबल क्विज नहीं होगा। वहॉ पर इस बात पर हमारा न्याय होगा कि हमने किस प्रकार का जीवन जिया, न कि बाइबल के तथ्यों की जानकारी की परीक्षा होगी।

इसका अर्थ यह हुआ कि हमें विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रेरित और प्रशिक्षित करना होगा कि वे बाइबल जैसा कहता है वैसा करे। यही अंतर पैदा करेगा और इस संसार में हमारी आत्मिक परिपक्वता की जॉच इसी आधार पर होगी।

यह बात संडे स्कूल शिक्षक के साथ कैसे संबंध रखती है?

संड़े स्कूल का उद्देश्य बच्चों को यह सिखाना है कि उन्हें ऐसा जीवन जीना है कि उनके जीवन से बाइबल के सत्य, सिद्धान्त और मूल्य प्रकट होने पाये।

यह एक कठिन तरीका है जिसमें अधिक रचानात्मकता की आवश्यकता है। इसमें कम लेख और अधिक जीवन को प्रधानता दी जाती है। इसमें अधिक कार्य करने की आवश्यकता होती है।

यह बहुत उत्तम होगा कि हम थोड़ा सत्य लेकर उस को जीवन में लागू करें जो मुख्य सिद्धांत बच्चों को मालूम होना चाहिये।

वे कौन से मुख्य सिद्धांत हैं जिसकी हमारे बच्चों को आवश्यकता है? वापस जाइए और उसे फिर से सिखायें।

आप कम सिखाते हो, लेकिन अधिक संवाद करते हो। आप अपने बच्चे को अधिक अमल करने के लिए प्रेरित करते हो।

जीवन के इस स्थिति में, हम इस परीक्षा में पड़ जाते हैं कि जिन बातों को करना है उसे नहीं करते और यह हमारे लिये एक चुनौती है कि हम व्यर्थ जानकारियों को अनावश्यक समझे। चूंकि हम एक युद्ध में हैं, इसलिए हमें गलत सूचनाओं की जरूरत नहीं है।

अगर आप मेरे साथ बाइबल को हमारे जीवन में कार्य रूप में लागू करना चाहते हैं तो आपकी सहायता के लिए 5 विचार यहॉ दिये जा रहे हैं जो आपकी कक्षा के लिए है। आप अपने से निम्न प्रश्न पूछ सकते हैं:

मेरे विद्यार्थियों को क्या जानना जरूरी है?, उन्हें ये जानकारी क्यों होनी चाहिए?, उन्हें इसके बारे में क्या करना चाहिए?, उन्हें यह क्यों करना चाहिए? और मैं उनकी किस प्रकार सहायता कर सकता/सकती हूँ?

1. मेरे विद्यार्थियों को क्या जानना जरूरी है?

सूचना

आपको यह बोझ उनको देना है।

2. उन्हें ये जानकारी क्यों होनी चाहिए?

प्रेरणा

आपके परिचय में उत्साह को विकसित करने की यह कुंजी है। अगर आप इस प्रश्न का जवाब दे सकते हो, तो ये आपको ऊर्जा देगा। अगर आपका श्रोता इस बात में यकीन न कर पाए कि आप उनसे क्या कहने जा रहे हो तो आपका वहां पर सिखाना मायने नहीं रखेगा।

3. उन्हें इसके बारे में क्या करना चाहिए?

व्यवहार में लाना

गृहकार्य दें। बच्चों को अपने माता–पिता को किसी बात के लिए धन्यवाद का एक पत्र लिखने को कहें। हम उन्हें स्पष्ट रूप से क्या करने के लिए कह सकते हैं? हम उनके लिए क्या काम दें जो उन्हें अगले स्तर पर ले जाएं?

4. उन्हें ये क्यों करना चाहिए?

उत्साहित करना

कल्पना करें कि हम में से सभी लोग स्कूल में यीशु की तरह अपने शत्रुओं से प्रेम करते हैं। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि हमें इसे क्यों करने की जरूरत है। एक कुर्सी लें और अपने बच्चों से बातचीत करें। इस तरह के कार्य के लिए उन्हें उत्साहित करें।

5. मैं उनकी किस प्रकार सहायता कर सकता/सकती हूँ?

पुनरावृत्ति

अपने विद्यार्थियों को इन बातों को याद रखने के लिए कुछ दें जो वे अपने साथ उनके घर ले जा सके। उदाहरण के लिए; उन्हें एक फूल दें और कहें कि उसे ऐसी जगह रखें कि वह मुरझा जायें, उसे मुरझाते हुए देखे, मुरझाये हुए फूल के माध्यम से उसे यह याद दिलायें कि मित्रता भी इस फूल की तरह होत है यदि उपेक्षा करें तो मित्रत समाप्त हो जाती है। रचनात्मक बनें। इसी तरह फ्रिज मैगनेट, वचन के कई नोट्स, फ्री सी ड़ी संदेश इत्यादि याद रखने वाली वस्तुएँ दे कर याद रखना सिखायें।

जैसे जैसे हम जीवन में व्यवहार को महत्व देते हैं तो आप पायेंगे कि आपकी शिक्षणशैली में परिवर्तन आया है जिससे आप अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इसका हमारे लिए भी फायदा यह है कि जितना ज्यादा हमं अपने विद्यार्थियों के जीवन में अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, उतना ही ज्यादा हम भी अपने आप को परिवर्तित पाते हैं।

इसलिए हम बहाना करना छोड़ें। कराहना छोड़ें। चिन्ता करना छोड़े और बुर्जुग होने, अधिक सुंदर होने या धनी या साहसी होने का इंतजार करना छोड़े। इन सबके स्थान पर अपने को मजबूत बनायें, मजबूती के साथ प्रार्थना करें, योजना बनायें और....कार्य आरंभ करें।

बाइबल, बच्चों को सिखाने या बच्चों को बाइबल सिखाने की बजाय हम बच्चों को बाइबल को जीना सिखाएं।

जो प्रयास करता है वह शायद खो सकता है लेकिन जो बिल्कुल प्रयास नहीं करता है,, वह पहले से ही पूरी तरह खो चुका है।

Goals for Teaching Hindi
20132

www.ChildrenAreImportant.com
info@childrenareimportant.com
We are located in Mexico.
DK Editorial Pro-Visión A.C.

बच्चें महत्वपूर्ण है